कबीरदास

डॉ. संतोष येरावार
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
जि. नांदेड़

- कबीरदास जी भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के महान संत ,समाजसुधारक और कवि है।
- उन्होंने अपने पूरे जीवनकाल में समाज में व्याप्त बुराइयों और वाह्य आडम्बर को दूर करने का प्रयास किया।
- समाज को जाग्रत करने का कार्य किया।
- उन्होंने हिन्दू और मुसलमानो की एकता पर जोर दिया।

ईश्वर के निराकार स्वरूप को कबीरदास जी ने अपने ज्ञान का आधार बनाया।

- उनके अनुसार, 'योग साधना द्वारा परम आनंद को प्राप्त किया जा सकता है।'

जन्म और स्थान :

कबीर के जन्म के विषय में अनेक किवदंतियां है। कबीर पन्थियो के अनुसार कबीर का जन्म संवत 1455 (1440 ईसवी) काशी के लहरतारा तालाब में कमल के फूल के ऊपर बालक के रूप में हुआ था।

'चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाठ ठए. जेठ सुदि बरसायत को पूरनमासी तिथि प्रकट भये। घन गरजे दामिनी दमके बूंदे बरसे जहर लाग गए। लहर तलाब में कमल खिले तहँ कबीर भानु प्रकट भये।'

इसके अलावा मान्यता है कि एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न बालक को लोकलाज के भय से लहरतालाब में उसे छोड़ आयी। इस बालक को नीरू और नीमा नामक जुलाहे दम्पति अपने घर ले आये । उन्होंने ही इस बालक का नाम कबीर रखा और पालन पोषण किया।

कबीर का बचपन अन्य बालको से भिन्न था। उनकी खेल में भी रूचि नहीं थी। कबीर के पिता की आर्थिक दशा ठीक नहीं थी। अतः वे पढ़ने नहीं जा सके। किताबी शिक्षा से वे दूर रहे। उनका कहना है कि **'मसि कागद छुवो नहीं ,कलम गहि नहीं हाथ।** 'कबीरदास जी ने कोई भी रचना लिखी नहीं है। उन्होंने जो बोला है। प्रवचन के तौर पर वही उनके शिष्यों ने लिख दिया।

कबीरदास का साहित्यिक परिचय :

- कबीर एक युग प्रवर्तक के रूप में जाने जाते है।
- कबीर की रचनाओं का संकलन **'बीजक'** के नाम से विख्यात हुआ है।
- **'कबीर ग्रंथावली'** बाबू श्याम सुन्दर दास द्वारा पदों को संगृहीत किया गया है।

कबीरदास जी की भाषा

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीरदास जी की भाषा को **'पंचमेल खिचड़ी'** बताया।
- उनकी भाषा को **सधुक्कड़ी भाषा** के रूप में भी जाना जाता है।
- इनकी रचनाओं में ब्रजभाषा,पंजाबी,बुंदेलखंडी,राजस्थानी ,पंजाबी, पूर्वी अवधी अरबी, फारसी और खड़ी बोली का उल्लेख मिलता है।
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने संत कबीर दास की भाषा को 'वाणी का डिक्टेटर' मानते है।** कबीरदास की अन्य रचनाओं में सुखनिधन ,होली ,अगम ,शब्द ,बसंत ,रक्त भी शामिल है।

कबीर
के
दोहे

गुरू की महत्ता

सतगुर की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।

लोचन अनंत उघाडिया, अनंत दिखावणहार।

शब्दार्थ

अनंत = अनन्त, लोचन अनंत = ज्ञान चक्षु, अनंत = ब्रह्म

सद्गुरु की महिमा अनंत है। गुरु ने शिष्य पर असंख्य उपकार किए हैं। उसने शिष्य के ज्ञान की असंख्य आंखें खोल दी हैं और अनंत परमेश्वर के दर्शन करवा दिए हैं।

गुरू गोविंद दोउ खडे, काके लागू पाय।

बलिहारि गुरू अपनै, जिन गोविंद दियो बताए।

शब्दार्थ

गोविंद = परमात्मा, इश्वर दोउ = दोनो, काके = किसके,

लागू पाय = चरण पकडु, जिन = जिसने,